मृगजल देखकर जैसे हीरन दौडते है वैसे कुछ लोग शांति पाने के लिए व्यसनो के पीछे दौडते है। परंतु शांति व्यसनमें नही, परमात्मा और माताजी की शरणमें और स्मरणमें है। राजराजेश्वरी श्री सिध्धेश्वरी माताजी (सधीमाता) मंदिर, रंगपुर, ते. माणसा, जि. गांधीनगर

राजराजेश्वरी श्री सिध्धेश्वरी देवी का दिव्यस्थानक रंगपुरधाम विश्वव्यापी आध्यात्मिक धर्मस्थान है। आंतरराष्ट्रीय समस्याओं के हल के लिए जागृति के शंख फूंकता यह मंदिर है। जीवन का सच्चा मर्म समजाकर शाश्वत शांति की तरफ ले जाना, यह धर्मस्थान का लक्ष्य है। मानव जाती के उत्कर्ष के लिए प्रबांध कीए गए वैदिक आदर्शोसे बना हुआ यह धर्मस्थान है।

बाल संस्कार, युवा संस्कार, महिला संस्कार तथा कन्याओं को संभालने का प्रचार, बेटी बचाओ अभियान और व्यसनमुक्ति के लिए जागृति रहे और अंधश्रध्धा निवारण के लिए, यह धर्म संस्थान एवं शिक्षण परायण संत (भूवाजी) प.पू. श्री अर्जुनभाई देसाई संनिष्ठ तरह से अविरत सेवामयी रहते है। इसके अतिरिक्त तबीबी सेवा, रेल राहत, सूखा राहत अभियान, भूकंप राहत और गाँव की सफाई जैसे मानव उपयोगी कार्यों में भी यह दिव्यधाम और इसके सेवक अविरत तत्पर रहते है। भारतीयताकी अनमोल विरासत समान संस्कृतिका आतंरराष्ट्रीय स्तर पर प्रचार-प्रसार हो और धर्मचूस्त संस्कृति कायम रहे वैसे प्रयास करना यह धर्मस्थान का ध्येय है।

# आईए व्यसनमुक्त समाज का निर्माण करे।

पापा, आपका यह व्यसन हमारा निर्दोष बचपन छीन लेगा...

राजराजेश्वरी श्री सिध्धेश्वरी माताजी (श्री सधी माताजी) मंदिर,
मु. रंगपुर, ते. माणसा, जि. गांधीनगर. (गुजरात) मो. : 99799 74161

सौजन्य : गोपाल परिवार, सुंवाली. मो. : 76000 17567

Max Graphics Vision : 9824416730

## चलो जलायें दीप वहाँ, जहाँ अभी भी अंधेरा है।

## व्यसनमुक्त समाज निर्माण अभियान

राजराजेश्वरी श्री सिध्धेश्वरी माताजी (श्री सधीमाताजी) मंदिर

## संदेश

**नरेन्द्र मोदी**
मुख्य मंत्री, गुजरात राज्य
दि. २३-०१-२०१३

धर्म के प्रति श्रद्धा में समजदारी का समन्वय धर्म के प्रति वैज्ञानिक अभिगम को जन्म देता है । महाकुंभ के धार्मिक अवसर, सामाजिक चेतना का मंगल महोत्सव बने यह कामना के साथ और माँ सिध्धेश्वरी की परम प्रेरणा को परंपरा का स्वरुप देते हुए भुवाजी श्री अर्जुनभाई एम. देसाई ने तीर्थराज में जन-जागृति के यज्ञ का आरंभ किया है।

## मांसाहार : मानव में पशुता को उत्तेजीत करता आहार !

हाँ ! विज्ञान ने साबीत कीया है की मांसाहार से मानव में हिंसक वृति और क्रुरता बढती है ।

नाखून, दांत, जठर और अंतडीया इत्यादी अंगो सहीत मानव शरीर की रचना ही ऐसी है की वह मांसाहार के लिए बिलकुल उचीत नही ! मांसाहार से आयुष्य घटता है, अंतडीयो का केन्सर, हाईब्लडप्रेशर, डायाबीटीस, कीडनी के रोग, ईत्यादी मुसीबते होती है ।

आप खुद ही फेंसला कीजीए की मांसाहार करके आपको पशु बनना हैं ?

सेवा सदभाव समभाव

## संपादकीय

**प्रेरणामूर्ति**

'व्यसनसे शांति नही
शांति का भ्रम एवं अशांति मिलती है ।
व्यसन मतलब सिर्फ तबाही !
मगर व्यसन करना ही हैं तो
सतसंग एवं सेवा का कीजिए ।'

राजराजेश्वरी श्री सिध्धेश्वरी माताजी संस्थान रंगपुर धाम द्वारा समाज के हीत में जनजागृति अभियान हाथ पर लिए गए हैं ।

समग्र भारत वर्ष में सबसे पहले गौ हत्या प्रतिबंधका कानून बनाकर उसका सख्ताई से अमल करने के लिए और युवा धन को नष्ट करनेवाले गुटखा के उपर प्रतिबंध लगाने की प्रेरणारुप कारवाई करने के लिए मा. प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी को हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित करते हैं ।

"बेटी बचाओ", "भ्रुण हत्या प्रतिबंध", "कन्याओ की शिक्षा" तथा सार्वत्रिक सामाजीक बंदी "व्यसनमुक्ति" जैसे कार्यो के लिए जन जागृति शिबिर यह संस्था द्वारा आयोजित कीए जाते हैं । सरकारश्री - स्वैच्छिक सामाजिक सेवाभावी संस्थाओ के समन्वय द्वारा यह धार्मिक धाम "वसुधैव कुटुंबकम्" की भावनासह हमारे परिवारो को सामाजिक दूषणो में से व्यसन मुक्त बनाने के लिए प्रथम कदम उठ रही हैं ।

आईए, हम सब मिलकर सामाजिक विकास की राह पर चलने में सहभाग बनकर कृतार्थ हो कर जनजागृति के यह दिव्ययज्ञ को प्रज्जवलित रखें.....

- श्री अर्जुनभाई देसाई (भुवाजी)

## धुम्रपान - तम्बाकु का सेवन :
## केन्सर को निमंत्रण

# अंडे क्या पेड पर उगते है ?

अफलित अंडो को वेजीटेरीयन अंडे कहकर शाकाहार के तौर पर खाया जाता है ।
परंतु अंडे पेड पर उगनेवाले कोई फल नहीं !

**अंडो में पोषकतत्व नही होता :**

- अंडो से ज्यादा गेहुं, बाजरी, जुवार और मकाई मेसे आठ से दस गुना ज्यादा शक्ति कार्बोहाईड्रेटस मिलती है ।
- मुंगफली, सोयाबीन, मग और अन्य अनाज में अंडो से दो से पांच गुना ज्यादा प्रोटीन होते है ।
- २०० अंडे खाने परभी १०० मि. ग्राम विटामीन 'सी' नही मिलता जो केवल एक ही आंवले या पाउ कीलो संतरो मे से मिलता है ।

**अंडे में जीवन है !**
**हमे कीसीका जीवन**
**छीनने का कोई अधीकार नही ।**
**कीसी को मारा कर जीना मानवता नही है ।**

मिसिगन युनिवर्सीटी, यु.ऐस.ए. के वैज्ञानिको ने साबीत कीया है की फलित हो या अफलित कोई भी अंडा निर्जीवन नही होता । हरेक अंडे में जीवन हैं । उसमें सांस लेने की प्रणाली के अलावा ईत्यादी क्रियाए भी होती है ।

व्यसन का भस्मासूरी स्वरुप प्रकोप मानव को अधोगति की गर्ता में डालकर अनगिनत परिवारों को दयनीय अवस्थाकी और ले जा रहा है, तब व्यसन की भयानकता का अहसास होने के बाद भी उससे बेखबर रहनेवालों के लिए संतो द्वारा दिखाई गई समझदारी तरफ ले जाने का यह अर्जुन प्रयास परिवर्तन के प्रभात का स्वागत करनेवाला बने, इसी अभिलाषा सह कुंभमेले में रंगपुर सिध्धेश्वरी ( संस्थान ) माता का मंदिर ( गुजरात ) के उपक्रम में प्रारंभ हुए सामाजिक चेतना के भगीरथ अभियान को अभिनंदन प्रेषित करता हूँ ।

आपका,

( नरेन्द्र मोदी )

प्रति,
श्री अर्जुनभाई एम. देसाई, भुवाजी,
सिध्धेश्वरी माताजी ( श्री सधीमाताजी ) मंदिर,
मु.पो. रंगपुर, ता. माणसा,
जि. गांधीनगर.

## धुम्रपान एवं तम्बाकु सेवन का परिणाम : हृदयरोग !

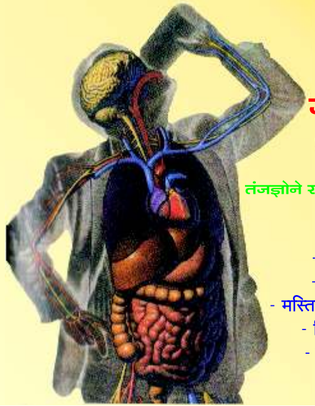

## शरीरमें एक भी भाग ऐसा नही के जीसे दारु के सेवन से नुकसान न होता हो !

तंजञोने साबीत कीया है के दारु के अवीरत सेवन से

- यकृत में जानलेवा रोग हो सकता है ....
- असाध्य हृदयरोग हो सकता है ....
- मुख, जठर, अतडीयों में अलसर होते है ....
- मस्तीश्क की कार्यवाही मंद पड जाती है ....
- मस्तिश्क के कोषो को भयंकर इजा पहुंचती है ....
- चितभ्रम होता है, याददाष्त जाती रहती है ....
- स्नायुओ और हड्डीओं को दुर्बल बनाता है ....

## मदिरा : अनेक नारीओका सुहाग उजाडता शैतान !!

मदिरा के नशे में जीवन गुमाने वाले
लाखो लोगो की विधवाओ का यह कल्पांत,
क्या आपके हृदय को झंझोडता है ?
करुणा के आक्रंद में डुंढे ऐसे
अनगिनत बच्चो की अनाथ
और निःसहाय दशा में
मदिरा रुपी पिशाचका ताण्डव दिखता है ?

क्या आपको खयाल है ?
हथेली में तम्बाकु मसला जाता है तब,

तब हथेली की भाग्यरेखा -
आयुश्यरेखा भी मिटती है ।

यह विकृत, असहय और
पीडादायक दुर्दशा का नाम है :

# केन्सर !

सावधान !
तम्बाकु - गुटखा केन्सर को निमंत्रीत करते है ।

आप धुम्रपान की लिज्जत लूटते है तब....

## तम्बाकु जलता है या आपका परिवार ?

आपके परिवार की खातीर,
आपके
लाडले बच्चो की खातीर
आप धुम्रपान से एवं
तम्बाकु सेवन से दुर रहे !

## दारु :
## बरबादी का फीसलन भरा मार्ग

कुछ लोग मानते है की कभी कभी
प्रसंग के उचित दारु पीने में कोई हानी नही,
नही उससे हम व्यसनी बन जाते है ।
परंतु वैसे भ्रम में रहनेवाले असंख्य लोग
दारु के अठ्ठा व्यसनी बन चुके है और
विनाश को न्योता दे चुके है ।

याद रहे :
दारु का सेवन, एक फीसलन भरा मार्ग है :
पायमालीका, बरबादीका, विनाशका....

## धुम्रपान मतलब आत्महत्या !

**क्या आप धुम्रपान करके**
**इन धातक रोगो को निमंत्रण देना चाहते है ?**

- फेंफडो का केन्सर
- हृदयरोग
- श्वासनालिका का केन्सर
- मुंह का केन्सर
- स्वरपेटी का केन्सर
- मस्तीष्क रोग के हमले
- यकृत एवं पित्ताशय का केन्सर
- और ऐसे अनदिनत रोग

**सावधान !**
**धुम्रपान या तम्बाकु - गुटखा का सेवन अनेक**
**भयंकर पीडादायक रोगो की आगमे आपको धकेल रहा है ।**